8

एक परिचय

(2 और 3 यूहन्ना)

अपनी पहली पत्री में यूहन्ना के स्वर संगति के दोहराव फिलेमोन और यहूदा से केवल एक अध्याय वाली नये नियम की पुस्तक होने से मेल खाते हैं। 1 यूहन्ना के विपरीत दोनों ही पुस्तकें बहुत स्पष्ट रूप में पत्र हैं। प्रत्येक में एक परम्परागत आरम्भ और समाप्त करने वाला भाग है और प्रत्येक पत्र विशेष समस्याओं से निपटने की मंशा से लिखा गया।

कैनन होना

कुछ लोगों द्वारा आरम्भ में 2 और 3 यूहन्ना को परमेश्वर की प्रेरणा से माना जाता था परन्तु 1 यूहन्ना को आरम्भ में जितना कैनन के रूप में स्वीकारा जाता था उतना इन दो पत्रों को नहीं। 325 ईस्वी के आस पास यूसब्युस ने उन्हें अपनी पुस्तकों की अपनी सूची में डाल दिया जो ''विवादित'' थीं।[1] परन्तु 367 ईस्वी में नये नियम की सत्ताइस पुस्तकों की अथोनसियुस की सूची में उन्हें रखा गया था।[2]

सम्भवतया कैनन के रूप में इन्हें इतनी देर बाद स्वीकार किया जाना उनके छोटा होने और धर्मशास्त्रीय महत्व में योगदान की कमी था। कलीसियाओं में इनके व्यापक तृप्त होने के पीछे एक और कारण यह तथ्य था कि इन्हें आरम्भ में सीमित स्रोताओं के लिए लिखा गया था।

लेखक

2 और 3 यूहन्ना दोनों ही ''प्राचीन'' द्वारा लिखे गए थे जिसने अपना परिचय नहीं दिया। ''प्राचीन'' शब्द का इस्तेमाल लेखक के रूप में यूहन्ना के अलावा किसी और की ओर संकेत नहीं करता, क्योंकि कोई प्रेरित प्राचीन भी हो सकता था (देखें 1 पतरस 5:1)। इससे यूहन्ना की बढ़ती उम्र पर ज़ोर दिया गया हो सकता है या यह उसके अधिकार का दावा करने का ढंग हो सकता है।[3]

स्पष्टतया आरम्भिक पाठकों को मालूम था कि यह प्राचीन यूहन्ना की इस बात का संकेत इन पत्रियों के निकट सम्बन्ध से ही मिलता है; बदले में 1 यूहन्ना को यूहन्ना रचित सुसमाचार से जोड़ा जाता है।[4] डेविड रोपर ने पत्रियों के लेखक के बारे में प्रमाण को संक्षिप्त किया है:

प्रमाण की एक श्रृंखला साबित करती है कि यूहन्ना रचित सुसमाचार और 1, 2, और 3 यूहन्ना सब एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गए थे। पहले, यूहन्ना रचित सुसमाचार और 1 यूहन्ना 1 ही लेखक द्वारा लिखे गए थे (तुलना यूहन्ना 1:1 और 1 यू. 1:1)। एक ही व्यक्ति ने 1 और 2 यूहन्ना लिखे: दोनों पुस्तकें किसी बज़ुर्ग द्वारा लिखी गईं: दोनों में ही अध्यात्मिक ज्ञान की चिंता है। ... , और उन में एक जैसे शब्दों और वाक्यांशों का इस्तेमाल है। तीसरा, एक ही व्यक्ति ने

2 और 3 यूहन्ना लिखे (तुलना 2 यू. 1, 12 और 3 यू. 1, 13, 14)।[5]

2 यूहन्ना की सामग्री

दूसरा यूहन्ना ''चुनी हुई श्रीमति और उसके लड़के-बालों'' के नाम हैं (आयत 1)। इन सम्बोधनों के साथ दो सम्भावनाएं हैं कि या तो यूहन्ना किसी मसीही स्त्री और उसके बच्चों को लिख रहा था, या वह रूपक के रूप में ''चुनी हुई श्रीमति'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करते हुए किसी स्थानीय मण्डली को लिख रहा था। उसने पत्र को यह कहते हुए समाप्त किया, ''तेरी चुनी हुई बहिन के लड़के वाले तुझे नमस्कार करते हैं'' (आयत 13)। इसलिए यह अधिक सम्भावना लगती है कि वह ''चुनी हुई श्रीमति'' शब्द किसी स्थानीय कलीसिया के लिए इस्तेमाल कर रहा था। यह बहुत ही संयोग की बात होगी कि यदि उस मण्डली में जिससे और जिसे यूहन्ना लिख रहा था, एक ही पद की दो स्त्रियां हैं। ''चुनी हुई श्रीमति'' कलीसिया के लिए भी कहा गया हो सकता है क्योंकि कलीसिया मसीह की दुल्हन है (देखें इफिसियों 5:23)।

कई बार इस विचार के विरोध में दो तर्क होते हैं कि ''चुनी हुई श्रीमति'' मण्डली को कहा गया हो:

(1) नये नियम में कहीं और परमेश्वर की संतान को कलीसिया की संतान नहीं कहा गया। परन्तु यह वचन उस भूमिका का अपवाद हो सकता है।

यह कहना कि कलीसिया के लोग मण्डली की संतान हैं, परमेश्वर के नाती-पोते बनाना है, क्योंकि परमेश्वर के कोई नाती-पोते नहीं हैं। बेशक रूपक का अर्थ अनिश्चितकाल तक विस्तार देना नहीं है।[6] कलीसिया के सदस्यों के लिए इस वचन में इसके (या उसके) बच्चों के रूप में मान भी लिया जाए तौभी आवश्यक नहीं कि इस तथ्य से वे ''परमेश्वर के नाती-पोते'' बन जाएंगे।

दूसरा यूहन्ना ऐसी ही झूठी शिक्षा का मुकाबला करने के लिए लिखा गया जिसका सामना यूहन्ना ने 1 यूहन्ना में किया था: ''क्योंकि बहुत से ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया: भरमाने वाला और मसीह का विरोधी यह है'' (आयत 7; 1 यूहन्ना 2:18, 22)।

विशेष इस पत्र में जिन लोगों को लिखा गया है, उन्हें झूठे शिक्षकों के साथ किसी प्रकार की संगति न रखने के लिए कहा गया है: ''यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो'' (आयत 10; देखें आयतें 9-11)।

यूहन्ना 3 की सामग्री

तीसरा यूहन्ना ''प्रिय गयुस'' के नाम (आयत 1)। गयुस और अन्यों को प्रोत्साहित करने विश्वासयोग्य सुसमाचार प्रचारकों को ग्रहण करते रहने और उनकी सहायता करते रहने के लिए लिखा गया था। इसमें दिमेत्रियुस भी होगा (आयतें 5-8, 12)। इसके विपरीत दिमेत्रियुस ने ऐसे सुसमाचार प्रचारकों को ग्रहण करने से इनकार कर दिया, बेशक वे इस प्राचीन अधिकार के पत्र लेकर आए थे। दिमेत्रियुस को चेतावनी दी गई थी कि यूहन्ना उस से निपट लेगा (आयतें 9, 10)।

सारांश

आमतौर पर 2 पतरस और यहूदा के पत्रों की तरह यूहन्ना के तीनों पत्र मसीही लोगों को ''उस सच्चाई को'' थामे रखने के महत्व को याद दिलाते हैं ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपी'' गई थी (यहूदा 3)। इसके अलावा वर्तमान युग में मसीही लोगों के लिए उपयोगी हैं क्योंकि यह मसीही विश्वास की बड़ी निश्चितताओं अर्थात उन निश्चितताओं की पुन: पुष्टि करती हैं जो हमें लगातार याद रखनी चाहिए।

कॉलेज की क्लास में मेरे एक छात्र ने यूहन्ना की तीनों पत्रियों के संदेश की ओर ध्यान दिलाया जिसे ''संगति'' शब्द में संक्षिप्त किया जा सकता है।

1 यूहन्ना: ''हमें परमेश्वर के साथ संगति रखने की आवश्यकता है।''

2 यूहन्ना: ''हमें झूठ के साथ संगति नहीं रखनी है।''

3 यूहन्ना: ''हमें परमेश्वर के दूतों के साथ संगति नहीं रखनी चाहिए।''

टिप्पणियां

[1]यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्टरी* 3.25. [2]एफ़. एफ़. ब्रूस, *दि एपिस्टल ऑफ़ जॉन: इंट्रोडक्शन, एक्सपोज़िशन एंड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: पिकरिंग एंड इंग्लिस, 1970; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 20. [3]यह कम सम्भावना लगती है कि ''प्राचीन'' इस अर्थ में किसी मण्डली के ऐल्डरों (या ''चरवाहों/पास्टरों/पासबानों'') में से एक के रूप में लेखक हो जिसमें फिलिप्पियों 1:1 में इस शब्द का इस्तेमाल हुआ है (जिसका अनुवाद ''अध्यक्षों'' हुआ है)। [4]शब्दावली तथा विषय से 2, 3 यूहन्ना दोनों ही 1 यूहन्ना से जुड़े हैं। (डी. ए. कार्सन, डग्लस जे. मू, एंड लियोन मौरिस, *एन इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 1992], 449); यूहन्ना रचित सुसमाचार और उसकी पत्रियां अपनी शब्दावली व शैली और अवधारणाओं के द्वारा ही एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। (एलन ब्लैक, *एन आउटलाइन ऑफ न्यू टैस्टामेंट इंट्रोडक्शन* [मेम्फिस, टैनिसी: हार्डिंग यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट स्कूल ऑफ रिलिजन, 1994], 45.) [5]''ए सर्वे ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे,* 14 (जुलाई 1993): 47 में डेविड रोपर, ''2 एण्ड 3 जॉन: डू 'ज़ एंड डों'टस ऑफ़ क्रिश्चियन हॉस्पिटेलिटी।'' [6]उदाहरण के लिए यह कहना कि ''कलीसिया मसीह की देह है'' एक रूपक है जिसे अनिश्चितकाल के लिए विस्तार नहीं दिया जा सकता। कुछ अर्थों में कलीसिया मानवीय देह की तरह है, परन्तु निश्चित रूप से हर अर्थ में नहीं।